स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

ऑगस्ट बियर की रिसती रीढ़

जर्मन शल्य चिकित्सक ऑगस्ट कार्ल गुस्टाव बियर (1861-1949) ने रीढ़ की हड्डी के निश्चेतक का आविष्कार किया था। बियर काफी दिलेर और नवाचारी व्यक्ति थे। काफी कोशिशों के बाद यह निश्चेतक अंततः 1898 में उनके हाथ लगा था। उन्होंने छः मरीज़ों की मेरुरज्जु में उपस्थित द्रव (सेरेब्रोस्पाइनल द्रव) में कोकेन के इंजेक्शन लगाए। ये मरीज़ शरीर के निचले भाग की शल्य क्रिया के लिए भर्ती हुए थे। सिरदर्द, मितली और उल्टी जैसे साइड प्रभावों को नज़रअंदाज़ कर दें, तो इंजेक्शन का असर अच्छा रहा। उस समय के आम निश्चेतकों के लिहाज़ से यह ज़बर्दस्त उन्नति थी।

मगर यह वास्तव में कितना प्रभावशाली था? इसका पता लगाने के लिए बेयर ने इसका प्रयोग खुद पर करने का इरादा किया।

तय यह हुआ था कि उनका सहायक ऑगस्टस हिल्डब्रंट उन्हें मेरु रज्जु में सोकेन का इंजेक्शन देगा। मगर सब कुछ योजना के मुताबिक नहीं चला। सुई तो बियर के मेरुरज्जु में सही सलामत पहुंच गई और सेरेब्रो-स्पाइनल द्रव उसमें से बहने भी लगा। मगर जो सीरिंज चुनी गई थी, वह सुई में फिट ही नहीं हुई। तो बियर को गर्दन में एक रिसते छेद के साथ छोड़ दिया गया। मगर प्रयोग रुका नहीं, बियर और हिल्डब्रांट ने भूमिकाओं की अदला-बदली कर ली।

हिल्डब्रांट के शरीर का निचला हिस्सा सुन्न हो गया। बीयर ने तमाम तरह से इस बात की जांच की कि सुन्नता वास्तव में पर्याप्त है। दोनों ने शराब और सिगार के साथ इसका जश्न मनाया।

आगे चलकर 1908 में बियर ने इस विधि का परिष्कार करते हुए प्रोकैन निश्चेतक का आविष्कार किया, जो आज भी इस्तेमाल किया जाता है। कई डॉक्टर आज भी शरीर के किसी हिस्से को इंट्रावीनस इंजेक्शन से सुन्न करने को बियर ब्लॉक के नाम से पुकारते हैं।

वैसे कुछ वर्षों बाद बियर ने इस सबमें दिलचस्पी लेना छोड़ दिया और होम्योपैथी वगैरह की ओर मुड़ गए।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी